प्रातःक्लास 26.3.68 ओमशान्ति पिताश्री ''आत्माभिमानी भव्''

ओमशान्ति। बाबा ने कहा था कि जो अनन्य सर्विसएबुल बच्चे हैं, वह बाबा के आगे मुरली चलावें तो बाबा देखें कैसे मुरली चलाते है। (जगदीश(संजय) ने मुरली चलाई)

अभी तुम बच्चे जो बैठे हो उनको तो यह मालूम है बेहद का बाप फिर से सतोप्रधान बना रहे हैं। और भल युक्ति यही बतला रहे हैं ; क्योंकि बाप आकर बच्चों को शिक्षा देते हैं कि आत्माभिमानी भव। तुम भाई–2 हो। आपस में बहुत रूहानी प्रेम चाहिए। तुम्हारा थ(ा) बरोबर। अभी न है। भूल वतन में तो प्रेम की बात ही नहीं। तो बेहद का बाप आकर शिक्षा देते हैं, बच्चे आज–कल करते–2 समय बीतता जाता है। दिन, मास, वर्ष बीतते जा रहे हैं। बाप ने बताया है तुम यह (देवी–देवता) थे। किसने तुमको ऐसा बनाया? बाप ने बनाया था। यह भी बाप ने सम(झा)या है फिर नीचे कैसे उतरते हो। ऊपर से लेकर नीचे उतरते–2 समय बीतता जा रहा है। वह दिन गया, मास गया, वर्ष गया, समय गया। तुम जानते हो पहले हम सतोप्रधान (थे)। आपस में बहुत प्यार था। बाप ने सभी भाईयों को शिक्षा दी है, तुम भाई–2 का आपस में बहुत प्रेम होना चाहिए। मैं तुम्हारा बाप हूं। कितना प्रेम से तुम बच्चों को मैं सम्भालता हूं। तुमको तमोप्रधान से सतोप्रधान बना देता हूं। तुम्हारा एमऑब्जेक्ट है ही सतोप्रधान बनने का। समझते हो हम जितना–2 सतोप्रधान बनते जावेंगे उतनी खुशी भी आती रहेगी। हम सतोप्रधान थे। हम भाई–2 आपस में बहुत प्रेम में थे। अभी बाप द्वारा पता पड़ा है हम देवताएं बहुत आपस में प्रेम में चलते थे। इन देवताओं की, हेवन की ही महिमा है। हम वहां के निवासी थे। फिर आजकल करते नीचे उतरते गये। तिथि–तारीख से लेकर आज (आ)कर 5000 वर्ष से बाकी कुछ वर्ष रहे हैं। शुरू से लेकर तुम कैसे पार्ट बजाते हो वह बुद्धि में है। अभी देहअभिमान कारण एक–दो में प्यार नहीं है। एक/दो की खामियां निकालते रहते हो। यह ऐसा है, फलाना ऐसा है। तुम आत्माअभिमानी थे तो ऐसे किसकी खामियां नहीं निकालते थे कि फलाना ऐसा है , इनमें यह है। बहुत आपस में प्यार था। फिर वही अवस्था धारण करनी है। यहां तो एक/दो को उस दृष्टि से देखते लड़ते–झगड़ते हैं। फिर यह बन्द कैसे हो? वह भी बाप समझाते हैं। बाप समझाते हैं बच्चे तुम सतोप्रधान पवित्र पूज्य देवता थे। फिर धीरे–2 नीचे गिरते–2 तुम तमोप्रधान बने हो। तुम कितने मीठे थे। अभी फिर ऐसा बनना है। तुम सुखदाई थे। फिर दुःखदाई बने हो। रावण राज्य में एक/दो को दुःख देने काम कटारी चलाने लगे हैं। सतोप्रधान थे तो कामकटारी नहीं चलाते थे। रावण राज्य में तुम एक/दो को कोस करने लग पड़े हो। 5 विकार कितने शत्रु हैं। यह है ही विकारी दुनियां ; क्योंकि रावण राज्य है। यह भी तुम जानते हो रामराज्य और रावण राज्य किसको कहा जाता है। आज कल करते सतयुग, त्रेता पूरा हुआ, द्वापर पूरा हुआ। कलियुग भी पूरा हो जावेगा। तुम सतोप्रधान से अभी तमोप्रधान बन पड़े हो। तुम्हारी वह रूहानी खुशी गायब हो गई है। काम चिक्षा पर बैठ तुम तमोप्रधान पतित काले बन गये हो। अभी फिर सतोप्रधान बनना है। मैं आया हूं तो ज़रूर तुमको सतोप्रधान बनाऊँगा। अभी अपन को आत्मा समझो। बतलाते हैं हे पतित–पावन आकर हमको पावन बनाओ। तो वह भी बाप समझाते हैं बच्चे, 5000 हज़ार वर्ष बाद संगमयुग आता है तब ही मैं आता हूं। तुम तमोप्रधान बन गये हो। फिर सतोप्रधान बनो। पावन बनो। अपन को आत्मा समझो। बाप को याद करो। जितना याद करेंगे खामियां निकलती जावेंगी। तुम सतोप्रधान थे कोई भी खामिययां नहीं थीं। तुम देवी–देवता कहलाते थे। अभी यह खामियां कैसे निकले? आत्मा को ही अशान्ति होती है। अभी अपने में अन्दर में जांच करनी है हम अशान्त क्यों हुये हैं। जब हम भाई–2 थे तो हमारा बहुत प्रेम था। अभी फिर वही बाप आया है। कहते हैं अपन को आत्मा भाई–2 समझो। एक/दो से प्रेम रखो। देहअभिमान में आने से ही एक/दो की खामियां निकालते हैं। एक/दो की खामी सभी निकालते हैं। बाप कहते हैं तुम पुरुषार्थ करो ऊँच पद पाने। तुम जानते हो नई दुनियां में हमको बाप ने ही वर्सा दिया था 21 जन्म लिए। एकदम भरपूर कर दिया था। अभी फिर बाप आया हुआ है तो क्यों न हम उनकी मत पर चलें। फिर हम अपना पूरा वर्सा लेवें। हम ही यह थे । फिर 84 जन्म लिये। तु(म)

कितने अडोल थे। कोई मतभेद न था। किसकी निन्दा आदि नहीं करते थे। अभी कुछ न कुछ है। वह सभी भूल जाना चाहिए। हम सभी भाई–2 हैं। एक बाप को ही याद करना है। यही ओना लगा हुआ है। हम सतोप्रधान बन जावें। फलाना ऐसा है इसने यह किया, ऐसा बोला इन सभी बातों को भूल जाओ। बाप कहते हैं यह सभी बात छोड़ अपन को आत्मा समझो। इसने ऐसा कहा, यह किया इन सभी बातों को भूल जाओ। फिर अभी तुम सतोप्रधान बनने लिए पुरुषार्थ करो। दूसरे का अवगुण न देखो। देहअभिमान में आने से ही अवगुण देख जाता है। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। भाई–2 देखो तो गुण ही देखेंगे। अवगुण को देखना न चाहिए। सभी को गुणवान बनाने की कोशिश करो। तो कब भी दुःख न होगा। भल कोई उल्टा–सुल्टा कुछ भी करे, समझा जाता है रजो, तमोप्रधान हैं तो उन्हों की ज़रूर ऐसी ही चाल होगी। अपन को देखना चाहिए हम कहां तक सतोप्रधान बने हैं। सबसे जास्ती गुण है बाप में। तो बाप से ही गुण ग्रहण करो। और सभी बातों को छोड़ दो। अवगुण छोड़ गुण धारण करो। बाप कितना गुणवान बनाते हैं। कहते हैं तुम बच्चों को भी मेरे समान बनना। बाप तो सुखदाई है ना। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है। फुरना यही लगा रहे कि हमको सतोप्रधान बनना है। और कोई बात ही नहीं सुनो। कोई की ग्लानी आदि न करो, न ऐसी बात सुनो। सभी में कोई न कोई खामियां हैं ज़रूर। खामियां ऐसी हैं जो फिर खुद नहीं समझ सकते हैं। दूसरे समझाते हैं इनमें खामी है। जो अपन को बहुत अच्छा समझते हैं; परन्तु कहां न कहां उल्टा बोलना–करना निकल ही जाता है। सतोप्रधान अवस्था में यह बातें नहीं होतीं। यहां खामियां हैं; परन्तु न समझने कारण अपन को मियां मिट्ठू समझ लेते हैं। बाप कहते हैं मियां मिट्ठू तो एक मैं हूं। तुम सभी को मिट्ठू (मीठा) बनाने आया हूं। जो भी अवगुण आदि हैं यह सब छोड़ दो। अपनी नब्ज़ देखो हम मीठे रूहानी बाप को कितना प्यार करता हूं। कि(त)ना खुद समझता हूं और दूसरों को समझाता हूं। देह अभिमान में आ गये तो कोई फायदा न होगा। मूल बात है ही यह। समझाना भी यह दुनियां तमोप्रधान है, सतोप्रधान थे। उनमें देवताओं का राज्य था। फिर वही 84 जन्म भोग तमोप्रधान बने हो। फिर सतोप्रधान बनना है। सबसे तमोप्रधान यह बने हैं। भारतवासी सतोप्रधान बनते हैं फिर तमोप्रधान भी वही बनते हैं। और कोई को सतोप्रधान कह नहीं सकते हैं। सतयुग में और कोई धर्म होता नहीं। बाप कहते हैं तुम अनेक बार तमोप्रधान से सतोप्रधान बने हो। अभी फिर बनो। श्रीमत पर चलो, मुझे याद करो। यही ओना चाहिए। पाप सर पर बहुत हैं, उनका चिन्तन रहना चाहिए। हम कितना पापात्मा बने हैं। बाप ने अभी सुजाग किया है। देवताओं के आगे जाकर कहते हो हम विकारी पापी हैं; क्योंकि देवताओं में पवित्रता की कशिश होती है; इसलिए उनके आगे कहते हैं फिर घर में आकर भूल जाते हैं। देवताओं के आगे जाते हैं तो अपन से घृणा आती है। घर में आते तो कुछ भी घृणा नहीं आती। ख़्याल ही नहीं करते इन्हों को ऐसा बनाया किसने। बाप अभी कहते हैं यह पढ़ाई पढ़ो। देवता बनना है तो इसके लिए यह पढ़ाई है। श्रीमत पर चलना पड़े। पहले–2 बाबा कहते हैं अपन को सतोप्रधान बनाना है; इसलिए मामेकं याद करो। और कोई झरमुई–झगमुई नहीं। अपना ही ओना रखो हमको यह बनना है। नॉलेज तो बच्चों को है। तुम जानते हो देवी देवता धर्म था। फिर यह सभी आये। सृष्टि पुरानी (हो) गई। बाप समझाते हैं तुम सतोप्रधान आदि सनातन देवी–देवता धर्म वाले थे। फिर कहां गये? इनकी ही 84 जन्मों की कहानी लिखी हुई है। अभी फिर हमको ऐसा बनना है। दैवी–गुण धारण करनी है। बाप को ही याद करना है। बाप से हमको वर्सा लेना है। वह भी बुद्धि में है। ऑटोमेटिकली बुद्धि में आवेगा। निन्दा, स्तुति तो तुम करते आये हो। वास्तव में स्तुति तो है नहीं। निन्दा ही निन्दा है। जिनकी एक तरफ स्तुति करते हैं उनकी दूसरी तरफ ग्लानी भी करते हैं; क्योंकि जानते ही नहीं हैं। एक तरफ बाप की महिमा करते हैं और दूसरे तरफ फिर कहते हैं कुत्ते–बिल्ले सबमें परमात्मा है। कितने बड़े शंकराचार्य आदि हैं। यह है ही रावण राज्य। कितने बड़े–2 असुर हैं।

उनको हिरण्यकश्यपु भी कहते हैं; क्योंकि अपन को ईश्वर समझते हैं। यह तो बड़ी शैतानी ठहरी। ठिक्कर–भित्तर सबमें परमात्मा कह देने से सभी बेमुख हो पड़े हैं। विनाश काले विपरीत बुद्धि विनश्यन्ति। विनाश काले सम्मुख बुद्धि विजयन्ति। जितना हो सके कोशिश करनी है बाप को याद करने की। अपन को आत्मा समझो और बाप को याद करो। आगे भी याद करते थे; परन्तु व्यभिचारी याद थी। बहुतों को याद करते थे। अभी बाप कहते हैं अव्यभिचारी याद में रहो। सिर्फ मामेकम् याद करो। भक्तिमार्ग के ढेर के ढेर चित्र हैं। जिनको भी तुम याद करते आये हो वह सभी अभी तमोप्रधान हो गये हैं। आत्मा तो उनकी तमोप्रधान है ना। तमोप्रधान होते तमोप्रधान को ही याद करते आये हैं। अभी फिर सतोप्रधान बनना है। वहां तो भक्तिमार्ग है नहीं। जो याद करना पड़े। बाप समझाते हैं फुर्ना तो बस यही रखो कि हम सतोप्रधान कैसे बनें। ज्ञान तो मिल गया सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। वह तो सहज है। अच्छा, कोई मुख से नहीं समझा सकते हैं बुद्धि में तो ज़रूर रहना चाहिए कैसे हम सतोप्रधान से तमोप्रधान बने हैं। अभी फिर सतोप्रधान बनना है। बुद्धि में है ; परन्तु किसको समझा नहीं सकते हैं। बोल नहीं सकते हैं। यह कहेंगे हरेक की अपनी तकदीर। भावी भी है। बाप ने तो बहुत सहज उपाय बताया है। बैज पर समझाना कितना सहज है। यह बेहद का बाप है। इनसे यह वर्सा मिलना है। बाप ज़रूर स्वर्ग की ही स्थापना करते हैं। सो तो ज़रूर यहां ही करेंगे ना। शिव जयन्ति माना स्वर्ग जयन्ति। स्वर्ग में देवी–देवताएं कैसे बने? हां, जो इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर इस पढ़ाई ये(से) बने हैं। बाप ने प्रतिज्ञा ली थी। अभी तुम बच्चों को यह समझ मिली है, और फिर औरों को भी समझ देनी है। याद की यात्रा भी सहज है। सहज ज्ञान है, सहज योग, सहज है वर्षा; परन्तु पाई–पैसे का वर्षा भी है तो पदमों का भी वर्सा है। हमारा मदार है पढ़ाई और याद पर। याद से और सभी बातें भूल जाते हैं। बाप समझाते रहते हैं देह अभिमान छोड़ो। भूलनी तो सभी को ही है। उनको नहीं देखना है। अभी मेहनत करनी है याद की यात्रा की। फलाना ऐसा है, यह करता है इन बातों से कुछ फायदा नहीं। टाइम वेस्ट हो जाता है। मन्ज़िल बहुत भारी है तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने की। इसमें ही विघ्न पढ़ती है। पढ़ाई में तूफान नहीं आते हैं। तो बाप कहते हैं अपन को देखो कहां तक हम याद करते हैं। कहां तक लव जाता है। लव तो ऐसा होता है बस बाप से ही चटके रहें। सिखलाने वाला वह बाप है ना। इनकी आत्मा थोड़े ही सिखलाती है। यह भी सीखते हैं। बाबा, बाबा कितना आप हमको समझदार बनाते हो। ऊँच ते ऊँच आप हो। फिर मनुष्य सृष्टि में हमको आप कितना ऊँच बनाते हो। ऐसे–2 अन्दर में महिमा करनी है। बाबा तो कमाल करते हैं। कोई भी नहीं जानते। बाप ने समझाया है फिर तुम अपना राज्य लो। अपन को आत्मा समझो। मामेकं याद करो खुशी से। याद से ही तुम सतोप्रधान बनेंगे। अपन को पूछना है हम बाबा को कितना याद करते हैं। कहते हैं खुशी जैसी खुराक नहीं। तो बाप के मिलने की भी खुशी होती है ना; परन्तु इतनी खुशी नहीं रहती है नहीं तो विवेक कहते हैं बहुत खुशी रहनी चाहिए। इस पढ़ाई से हम यह राजायें बनेंगे। बेहद के बाप के हम बच्चे हैं। बाबा हमको पढ़ाते हैं। बाबा कितना रहमदिल है। सुप्रीम बाप हमको पढ़ाते हैं। भल आगे भी सुनते थे भगवानुवाचः; परन्तु झूठ होने कारण दिल से लगता नहीं था। मनुष्य ने तो फिर भगवान को सर्वव्यापी कह ठिक्कर–भित्तर में ठोक दिया है। भगवानुवाचः कृष्ण के लिए कह दिया है। ठिक्कर–भित्तर में भगवान है तो फिर वाच्य कैसे करेंगे? मनुष्यों की बुद्धि कितनी तमोप्रधान है। देखने में तो मनुष्य ही आते हैं ; परन्तु अन्दर में घमण्ड कितना है। बड़े–2 सन्यासी जो अपन को ईश्वर मानते हैं फिर पूजा भी करते हैं। तब बाबा ने कहा था उन्हों को लिखो। शिवभगवानुवाच, पूज्य कब पुजारी बन न सके। पुजारी कब पूज्य बन न सके। डालो अखबार में। तुम किस पर टीका नहीं करते हो। इन बिचारों का भी कल्याण तो करना है ना। इस समय इन्हों की जैसे राजाई है। यह अभी नहीं सुधरेंगे। यह समझ जायें तो जैसे तुम जीत लिया। वह अभी समय है नहीं। वह आ जाये तो उन्हों की सारी राजाई ही खलास हो जाये। बहुत रिवोल्यूशन हो जाये। तुम क्या कर रहे हो तुमको कोई .....

थोड़े ही है। तुम अपना स्वराज्य स्थापन कर रहे हो गुप्त वेश में। आजकल तो राजाओं की भी पगड़ी उतार ली है। आसुरी सम्प्रदाय मायावी पुरुष हैं ना। कितना गिर पड़े हैं; क्योंकि रावण राज्य है। रावण सम्प्रदाय का धंधा ही यह है। कितना आसुरी बुद्धि बन पड़े हैं रावण के कारण। कुछ भी समझते नहीं। जैसे बन्दर बुद्धि। हैं तो मनुष्य ना। तुम युक्ति से कह सकते हो। भगवानुवाच यह आसुरी सम्प्रदाय है। क्या–2 बातें बना दी हैं। राम की सीता चोरी हो गई। फिर बन्दर सेना ली। अभी सेना कब बन्दरों की होती है क्या? तुम्हारी बुद्धि में बहुत नई–2 बातें हैं। और कोई की बुद्धि में नहीं है। फॉरेनर्स भी जैसे पत्थर बुद्धि बन गये हैं। कुछ समय आगे समझते थे भारत की क्या गति हो गई है। आकर लेक्चर करते थे। उनको यह पता नहीं था कि आदि सनातन देवी–देवता धर्म कब था। अभी बाप ने समझाया है तुम ही देवताएं थे। बाप भारतवासियें को ही आकर समझाते हैं। भारतवासी ही अपन को हिन्दु कहते हैं। एक भी अपन को देवता नहीं समझते। बुद्धि में आता नहीं। हम देवताओं को पूजते हैं तो ज़रूर देवता धर्म के ठहरे ना । क्राइस्ट को मानने वाले कहेंगे ना हम क्रिश्चयन हैं। यह देवी–देवता धर्म ही प्रायः लोप हो गया है। तुम्हारी बुद्धि में भी अभी आया है। बाप ने बताया है आधा कल्प है ज्ञान, आधा कल्प है भक्ति। अभी है संगमयुग। इन बातों को तुम्हारे सिवाय और कोई समझ न सके। आगे चल यह दैवी झाड़ बढ़ता जावेगा। यह है थुर । बाप कहते हैं मैं थुर स्थापन करने आया हूं । बाकी सभी खलास हो जावेंगे; इसलिए सभी को यह पैगाम दो। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझो। मामेकं याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। तुम विश्व के मालिक बन जावेंगे। बस, यह पैगाम सभी को दो। घर–2 में यह मैसेज दो। मामेकं याद करो। और कोई धर्म स्थापन करने वाला ऐसे नहीं कहेंगे; इसलिए उनको मैसेज वा पैगम्बर नहीं कहा जा सकता। पैगाम तो बाप ही देते हैं। मामेकं याद करो तो तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। यह पैगाम है ..... बाप कहते हैं सिवाय मुझ बाप के और कोई को याद न करो। पैगाम कितना है। सभी को यह पैगाम देना है। बच्चों को युक्ति (रचनी) है। यह म्यूज़ियम आदि बनाया ही है पैगाम देने लिए। बाप कहते हैं ऊँच ते ऊँच मैं हूं। मुझे याद करो तो जन्म–जन्मांतर के पाप कट जावेंगे। यह है बाप का पैगाम। सतोप्रधान बन फिर तुम सतोप्रधान नई दुनियां में आ जावेंगे। यह पैगाम दो। तुम पैगाम देने वाले हो ना। मूल बात ही यह है। तुम समझेंगे तो बाप तो सत्य सुनाते हैं। इनमें कोई असत्य बात है नहीं। फिर सत्य समझते जावेंगे। पैगाम सब जगह लिख दो। मैं आत्मा हूं, मुझे(मुझ) बाप को याद करना है। तो सतोप्रधान बन जावेंगे। सारा ज़ोर इस पर ही देना है। यूरोपियन लोग के लिए इस चक्र और झाड़ में नॉलेज है। उनको यही बताना चाहिए वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है। पहले–2 कौन आते हैं। तुम आत्मा सतोप्रधान थे। अभी तमोप्रधान हो फिर सतोप्रधान बन वापस जाना है। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। यह पैगाम और कोई दे न सके सिवाय तुम्हारे। जो भी आते हैं उनको पहले–2 यह पैगाम देना है। पावन भी ज़रूर बनना है। सो तो याद से ही बनेंगे। पहली मुख्य बात है यह। नहीं तो तुम्हारा टाइम वेस्ट जाता है। बीती सो बीती देखो.....पहले–2 पैगाम यह देना है। म्यूज़ियम में कितने आते हैं। आपे ही सुन कर आवेंगे। वण्डर खावेंगे। अमरनाथ यह कथा सुना रहे हैं अमरपुरी में जाने लिए। वह है अमरलोक। नीचे है मृत्युलोक। सीढ़ी है ना। अभी फिर हम ऊपर जाते हैं। फिर नम्बरवार आते हैं। यह सभी बातें समझनी होती हैं। कोई किस प्रकार, कोई किस प्रकार समझाते हैं। बाप भी समझाते रहते हैं। हमेशा समझो बाबा समझाते हैं। उनको ही याद करते रहो तो खुशी रहेगी। शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं। यह है वण्डरफुल युगल। बाबा भी कहते हैं ना यू आर माई वाइफ। तुम्हारे द्वारा मैं एडॉप्ट करता हूं। मुझे थोड़े ही माता कहेंगे। एडॉप्ट करता हूं। फिर माताओं को सम्भालने लिए एडॉप्ट किये हुये बच्चों से एक को मुक़र्रर करता हूं। यह ब्रह्मा पुत्री तो सबसे बड़ी नदी है। सच्ची–2 माँ तो यह है त्वमेव माताश्च पिता.....उनको कहते हैं। जाना तो इस माता को भी है। अच्छा, बच्चों को बापदादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग, नमस्ते। ओमशान्ति।